कमलेश्वर का रचना संसार

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् देश आधुनिकताबोध की ओर उन्मुख हो गया। कई प्रगतिशील योजनाएँ प्रारंभ हुईं, परंतु इच्छित उन्नति की प्राप्ति नहीं हुई। भारतीय समाज आर्थिक दृष्टि से मज़बूत नहीं था। मध्यवर्ग आर्थिक तनाव में तड़पने के लिए विवश हो गया था। ग्रामीण जनता अभावग्रस्त जीवन से मुक्ति की लालसा में शहरों की ओर चल पडी। कस्बों तथा गाँवों से व्यक्ति नगरों, महानगरों में जाकर बसने लगे। कमलेश्वर जी स्वातंत्र्योत्तर जनजीवन के हर पहलू से पूर्णतः अवगत थे। वे समाज के निम्न मध्यवर्गीय एवं मध्यवर्गीय जीवन के बहुमुखी पक्षों से पूर्णतया परिचित थे। कमलेश्वर की रचनाएँ स्वातंत्र्योत्तर भारत के बदलते जीवन की स्पष्ट दस्तावेज है। इस बदलते परिवेश के हर पहलू को उन्होंने सम्यक् रूप से उभारा है। उनकी रचनाओं में कस्बाई मनोवृत्ति, महानगरीय जीवन के सर्वतोन्मुखी बदलाव, सांप्रदायिकता के दुष्परिणाम आदि की अभिव्यक्ति स्पष्ट द्रष्टव्य है। उनके उपन्यास, कहानी, आलोचना, पटकथा आदि सभी विधाओं में इनकी झलक मिलती है।

प्रथम अध्याय
कमलेश्वर: व्यक्ति और अभिव्यक्ति

प्रथम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के उल्लेख्य रचनाकार कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विहग दृष्टि डाली गई है। एक व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसकी वैयक्तिक रुचियों, आदतों प्रतिक्रियाओं, परिवेश तथा सृजन के सहारे संभव होती है। व्यक्तित्व उसके मानसिक एवं शारीरिक संगठन ही है। व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार, समाज, परिवेश आदि का योगदान महत्वपूर्ण है। कमलेश्वर जी की शख्सियत का अनूठापन उनके परिवार एवं समाज से ही अर्जित है।

प्रस्तुत अध्याय में उनका जन्म, शिक्षा-दीक्षा, रहन-सहन, विचारधारा एवं संपूर्ण, व्यक्तित्व पर सरसरी दृष्टि डाली गई है।

कमलेश्वर का जन्म ६ जनवरी सन् १९३२ को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी कस्बे में हुआ था। उनका पूरा नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना है। उनका परिवार टूटा बिखरा सामंतवादी एवं मध्यवर्गीय था। उनका बचपन कठिनाइयों में बीता। अभावग्रस्त बचपन ने उन्हें काफी ज़िम्मेदार बना दिया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मैनपुरी के गवर्नमेंट हाईस्कूल में हुई। कमलेश्वर जी पहले विज्ञान के विद्यार्थी थे। सन् १९५० को एम.ए. की उपाधि ग्रहण की। उन्होंने भौतिकी, गणित, अर्थ शास्त्र, रसायन शास्त्र, भूगोल आदि विषयों में गहरा ज्ञान प्राप्त किया। सन् १९५२ में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् वे हिन्दी की श्रीवृद्धि एवं सेवा करने लगे।

कमलेश्वर जी का रचना-संसार निजी अनुभवों एवं अनुभूतियों से प्रणीत हैं। उनकी रचनाएँ निरंतर परिवर्तित एवं परिमार्जित होने की गवाही देती हैं। मैनपुरी कस्बा ही उनकी प्रारंभ कालीन रचनाओं की पृष्ठभूमि रही है। स्वातंत्र्योत्तर कालीन समाज तथा व्यक्ति ही उनकी रचनाओं के केंद्र में प्रस्तुत है। उनकी रचनाधर्मिता में उपन्यास, कहानी, आलोचना, नाटक, बालनाटक, यात्रा विवरण, संस्मरण, संपादन, पटकथा आदि विधाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

द्वितीय अध्याय
उपन्यासकार कमलेश्वर

द्वितीय अध्याय में कमलेश्वर जी की औपन्यासिक यात्रा का शोधपरक अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत हिन्दी उपन्यास का प्रादुर्भाव और उपन्यास जगत में आए सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, वैयक्तिक प्रवृत्तियाँ निर्धारित की गई हैं। प्रस्तुत अध्याय में

कमलेश्वर जी के उपन्यासों का वर्गगत अध्ययन तथा आकलन-अवलोकन किया गया है। उनके उपन्यासों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है - कस्बाई, महानगरीय तथा सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को उकेरने वाले उपन्यास।

कमलेश्वर जी के प्रारंभ कालीन उपन्यासों में कस्बाई मनोवृत्ति, वहाँ के जीवन की विसंगतियाँ, भ्रष्ट राजनीति, युवा पीढ़ी की समस्याएँ, गरीबी का चित्रण, बेरोज़गारी, नारी जीवन की विसंगतियाँ, परंपरागत मान्यताएँ, कपटी आध्यात्मिकता आदि दृष्टिगत है। कस्बे की मध्यवर्गीय तथा निम्न मध्यवर्गीय जनता के परिवर्तन को उन्होंने दर्शाया है। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' इसका सशक्त उदाहरण है। मशीनीकरण, औद्योगिक विकास, शिक्षा का प्रचार आदि होने पर भी कस्बे का आदमी अपने को बदलना नहीं चाहता। कस्बे के व्यक्ति अपने संस्कार, परंपरा, मूल्य आदि में बदलाव लाना नहीं चाहता। वे बड़े स्वाभिमानी हैं। अपना कस्बा मैनपुरी को सामने रखकर ही उन्होंने यह उपन्यास रचा था।

कमलेश्वर जी ने महानगरीय वातावरण को सामने रखकर अनेक उपन्यास लिखे हैं। महानगरों की यांत्रिकता, भीड़, कृत्रिमता, अलगाव, कुंठा, ऊब, तनाव, अंतर्द्वन्द्व, अकेलापन, मूल्यच्युति आदि उनके उपन्यासों में द्रष्टव्य है। महानगरीय जीवन में मित्रता का अभाव एवं संबंधों में खोखलेपन दृष्टिगत है। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जैसे महानगरों में आत्मीयता का अभाव भी दीख पड़ता है। 'तीसरा आदमी', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', 'आगामी अतीत' आदि में महानगरीय परिस्थितियों, समस्याओं की सजीव अभिव्यक्ति हुई है। कमलेश्वर जी ने समकालीन महानगरीय चेतना को पाठकों के सम्मुख सफलतापूर्वक उकेरा है। सांप्रदायिक विचारधारा भारतीय जीवन में लंबे समय तक मौजूद रही है। सांप्रदायिकता की भावना

केवल मुसलमान एवं हिन्दू के बीच सीमित नहीं रहती। वह भारत के सभी धर्मों के बीच अभिशाप बनकर पनप रही है। सांप्रदायिक शक्तियाँ धर्म को अपना हथियार मानकर सामान्य जनता को भड़काती हैं और दंगे करवाती हैं। इस प्रकार वे भारत के धार्मिक, सामाजिक एकता को मिटाते हैं। 'काली आँधी', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'कितने पाकिस्तान' आदि कमलेश्वर जी के इस कोटि के उपन्यास हैं। वास्तव में उनके उपन्यास सामाजिक तथा लेखकीय उत्तरदायित्वों को निबाहने वाले हैं।

तृतीय अध्याय
कहानीकार कमलेश्वर

तृतीय अध्याय में कमलेश्वर जी की कहानियों की विस्तृत विवेचना हुई है। इस अध्याय में उनकी कहानियों को श्रेणीबद्ध किया है। कमलेश्वर जी ने कस्बाई परिस्थितियों को अपनी कहानियों में उकेरा है। कस्बाई मनोवृत्ति, वहाँ की समस्याएँ, नारी की दुरवस्था, शोषित, पीड़ित मध्य एवं निम्न मध्यवर्ग, आर्थिक तनाव, युवा पीढ़ी की विवशताएँ आदि ज्वलंत विषय उनकी कहानियों में दृष्टिगत है। उनकी कस्बे से संबंधित कहानियों में 'राजा निरबंसिया', 'गर्मियों के दिन', 'कस्बे का आदमी', 'मुर्दों की दुनिया', 'गाय की चोरी', 'देवा की माँ', 'नौकरी पेशा' आदि उल्लेखनीय हैं।

नगर तथा महानगर आज़ादोत्तर भारत के परिवर्तन की देन है। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जैसे महानगरों की समस्याएं अधिक जटिल हैं। महानगरों की यांत्रिकता, कृत्रिमता, संबंधों में आत्मीयता का अभाव, खोखलापन, अलगाव, अकेलापन, तनाव, संशय आदि उनकी कहानियों का विषय है। 'खोई हुई दिशाएँ', 'दिल्ली में एक मौत', 'एक थी विमला',

'पराया शहर', 'स्मारक', 'आत्मा अमर है', 'मैं', 'अजनबी', 'उस रात वह मुझे ब्रीच कैंडी में मिली थी और ताज्जुब की बात यहा कि दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला था', 'अच्छा थीक है...', 'चार महानगरों का तापमान', 'आधुनिक दिन आधुनिक रातें', 'नाच', 'तंग गलियों के मकान' आदि इसके द्वलंत प्रमाण हैं। महानगरीय परिवार का ढाँचा बदल जाने से घर में पुरुष का ऊँचा स्थान हिल गया। पुरुष वर्चस्व की समाप्ति महानगरीय सभ्यता को देन है। शिक्षा व आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति से नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई। कमलेश्वर जी की कहानियाँ आत्मनिर्वासित व्यक्ति मन की पीड़ाओं के आकलन-अवलोकन से संपृक्त है। उनकी महानगरीय कहानियाँ इसके ज्वलंत प्रमाण हैं।

चतुर्थ अध्याय
आलोचक कमलेश्वर

आलोचना की प्रवृत्ति मानव में निहित सहज वृत्ति है जो अनेकरूपता धारण करते आए हैं। साहित्य एवं समीक्षा दोनों का उद्‌भव-स्थान मानव मन है। कविता, रसवाद, मनोविज्ञानवाद, मार्क्सवाद, विश्ववाद आदि तक आते-आते आलोचना-विधा की प्रगति हुई। साहित्य-सृजन की प्रवृत्ति जटिल होती है। एक सफल समीक्षक कला-कृति की अंग-उपांगों का सूक्ष्म ध्यान रखकर उसका मूल्यांकन करता है। सफल आलोचक आलोच्य कृति की उपलब्धियों एवं अभावों का मूल्यांकन करता है।

भारत के प्राचीन साहित्य में, विशेषकर संस्कृत में काव्य शास्त्रीय अंग-उपांगों का विवेचन-विश्लेषण हुआ है। भरतमुनि, आचार्य भामह, दण्डी, मम्मट, राजशेखर, आनंदवर्द्धन, पं. जगन्नाथ आदि प्रमुख आलोचक हैं। इस युगीन साहित्य में सैद्धांतिक आलोचना का स्वरूप प्रमुख और प्रखर रहा है।

भारतेन्दुयुगीन समीक्षा पद्धति अपने पूर्ववर्ती आलोचना से भिन्न थी। भारतेंदु जी ने हिन्दी गद्य के स्वरूप को सँवारकर साहित्य के इतिहास में 'गद्य युग' का शुभ आरंभ किया। इस युगीन पत्र-पत्रिकाओं में आलोचनात्मक रचनाएँ छपने लगी थीं। इस युग से वर्तमान ढंग की आलोचना की शुरुआत हुई। इस युगीन आलोचना में समीक्षा के नवीन उपकरणों का समावेश हुआ।

द्विवेदी युगीन आलोचना पद्धति अधिक सशक्त तथा मौलिक थी। पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी जी के 'विश्व साहित्य' तथा श्यामसुन्दरदास के 'साहित्यालोचन' में पाश्चात्य सैद्धांतिक समीक्षा का स्वरूप प्रस्तुत है।

हिन्दी समालोचना को नए क्षितिज प्रदान करने वालों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी वरिष्ठ हैं। वैज्ञानिक आलोचना पद्धति उस युगीन प्रमुख विशेषता है। उन्होंने आलोचना के विविधमुखी विकास में अपना योगदान दिया। 'रसमीमांसा', 'चिन्तामणि' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। शुक्लोत्तर समीक्षा पद्धति में व्यावहारिक आलोचना की प्रमुखता है।

नई समीक्षा पद्धति में साहित्य का नए ढंग से मूल्यांकन, साहित्यकारों के दायित्व, साहित्य तथा समाज का संबंध, साहित्य के मानदंड आदि द्रष्टव्य है। डॉ. देवराज, मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती, गिरिजाकुमार माथुर, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी आदि इस युगीन श्रेष्ठ आलोचक हैं।

कमलेश्वर जी ने 'नई कहानी' से संबंधित कई लेख लिखे। 'नई कहानी की भूमिका' में उन्होंने 'नई कहानी' के विविध आयामों को प्रस्तुत किया। 'नई कहानी' का सैद्धांतिक विवेचन एवं विश्लेषण इस आलोच्य कृति में दृष्टिगत है। इसमें उन्होंने प्राचीन कहानियों की विस्तृत विवेचना की है। इस कृति में नई कहानी से संबंधित नई घटनाएँ, नये क्षण, नये परिवेश आदि दर्शाया है। नई कहानी की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला

है। उन्होंने कहानी, पुरानी कहानी, समकालीन कहानी, लघु कहानी आदि पर भी विचार-विमर्श किया है।

नई कहानी की भाषा की विशेषताओं पर भी विस्तृत विवेचना की गई है। नई कहानी की भाषा असाधारण ऊर्जा तथा असाध्य शक्ति है। 'नई कहानी' सामान्य जनमानस से जुड़ी है। इसलिए उसकी भाषा भी सहज, सरल, परिमार्जित है। आदमी-आदमी के रिश्ते, बदलते परिवेश, बदलती ज़िन्दगी, महानगरीय सभ्यता से घुस आए विषाद, संत्रास, संघर्ष, आकांक्षाएँ आदि को उकेरने के लिए एक सीधी-साधी, पाठकों को ऊर्जा एवं शक्ति प्रदान करने वाली भाषा प्रयुक्त की गई है। कमलेश्वर जी ने 'सारिका' के 'मेरा पन्ना' में अपना संपादकीय वक्तव्य प्रस्तुत किया है। इसमें साहित्यकारों के उत्तरदायित्व, कहानी की विभिन्न पहलुओं की पहचान, 'नई कहानी' पर विचार-विमर्श प्रस्तुत है।

पंचम अध्याय
पटकथाकार कमलेश्वर

सिनेमा एक सार्वभौमिक विधा है। यह दृश्यकाव्य का चरम वैज्ञानिक उत्कर्ष है। फिल्म-जगत आज अधिक विशाल हो गया है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कारों के सहयोग से यह विधा अधिक लोकप्रिय बन चुकी है। संवाद, संगीत, नृत्य तथा अभिनय द्वारा फिल्म दर्शकों का मनोरंजन करती है।

भारतीय सिनेमा का इतिहास विश्व सिनेमा के इतिहास के लगभग बराबर है। आज़ादी-पूर्व भारत में सिनेमा का निर्माण होने लगा था। अतः भारत में मूक सिनेमा सन् १८९६ में शुरू हो गया तथा सवाक् सिनेमा सन् १९३० में।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में, बंगाल में एक ऐसी पीढ़ी उभरी जिसने फिल्म से संबंधित गंभीर साहित्य पढ़ा-रचा। इनमें सत्यजित राय, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन आदि सर्वप्रथम हैं। उत्तर भारत में ही नहीं दक्षिण भारत में भी अनेक फिल्में निकलने लगीं। मलयालम, कन्नड, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं में भी अनेक फिल्म बनने लगीं। इस प्रकार भारतीय सिनेमा दिन-ब-दिन विकसित होने लगी।

कमलेश्वर जी ने 'समांतर कहानी' की तरह 'समांतर सिनेमा' का सूत्रपात भी किया। उनकी कहानियाँ एवं उपन्यास उस युगीन निर्देशक और निर्माता के प्रिय रहे थे। उन्होंने 'काली आँधी' उपन्यास को 'आँधी' नाम से फिल्म बनाई। राजेन्द्र यादव जी की 'सारा आकाश' फिल्म का पटकथाकार कमलेश्वर जी है। 'मौसम' उनकी 'आगामी अतीत' उपन्यास का फिल्मांकन है। 'छोटी सी बात', 'तुम्हारी कसम', 'हम तेरा आशिक हैं', 'साजन बिना सुहागन', 'राम बलराम', 'द बर्निंग ट्रेन', 'साजन की सहेली', 'रंग-बिरंगी', 'बाज़ी', 'लैला', 'पति, पत्नी और वह 'आदि उनकी प्रमुख पटकथाएँ हैं। उन्होंने अपनी प्रभावमयी भाषा से दर्शकों तथा पाठकों को चौंकाया है।

कमलेश्वर जी की ज़्यादातर पटकथाएँ मुंबई में लिखी गई थीं। उनकी अधिकतर पटकथाएँ आज उपलब्ध नहीं है। वे अप्राप्य तथा अप्रकाशित हैं।

कमलेश्वर की पटकथाओं के अध्ययन से विदित होता है कि उनके पात्र मध्यमवर्गीय व्यक्ति ही है। पात्रों की मानसिकता को अभिव्यक्ति देने के लिए उचित वातावरण की सृष्टि करने में वे पूर्णतः सक्षम रहे। उनकी पटकथाओं में नयापन लक्षित हुआ। भाषा में जादुई स्पर्श देकर उन्होंने पाठकों एवं दर्शकों को विस्मित कर दिया।

छठा अध्याय
उपसंहार

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना के उपन्यास, कहानियाँ, आलोचना तता पटकथाओं का संपूर्ण आकलन-अवलोकन प्रस्तुत शोध प्रबंध में द्रष्टव्य है। उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली घटनाएँ, व्यक्तित्व का अनूठापन, साहित्य क्षेत्र में उनका पदार्पण, रचनाधर्मिता आदि से यह ज्ञात होता है कि कमलेश्वर जी हिन्दी साहित्य के अनमोल व्यक्ति है।

कमलेश्वर जी के उपन्यास निम्न मध्यवर्गीय तथा मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं से संपृक्त है। उन्होंने कस्बे से संबंधित उपन्यासों एवं कहानियों में कस्बे के पूरे वातावरण, वहाँ के जन-जीवन को हृदयहारी ढंग से उकेरने की कोशिश की है। महानगरीय परिस्थितियों का वास्तविक चित्रण उनकी कहानियाँ तता उपन्यासों में दृष्टिगत है। एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्म लेने के कारण वे उन परिस्थितियों एवं मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं से परिचित थे। इसीलिए उनके प्रारंभ कालीन उपन्यासों एवं कहानियों में कस्बाई मध्यवर्गीय विसंगतियाँ अधिक झलकती हैं।

कमलेश्वर जी मुंबई, दिल्ली जैसे महानगरों में रहे हैं। वहाँ के व्यक्ति में पनपे तनाव, दबाव, कुंठा, अकेलापन, अलगाव, ऊब, परायापन, कृत्रिमता, आत्मीयता का अभाव आदि से भी वे परिचित थे। इसलिए उनकी दूसरी दौर की रचनाओं में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को भी उन्होंने नज़दीक से देखा। यह समस्या भी उनकी कृतियों में स्पष्ट दर्शायी गई है।

कमलेश्वर जी का सूक्ष्म निरीक्षण एवं विचार-विमर्श करने के स्वभाव के उनके आलोचक व्यक्तित्व को जगाया है। आलोचना करने में भी

उन्होंने अपना तरीका स्वायत्त किया है। उस युगीन साहित्य में 'नई कहानी' का स्थान निर्धारित करके उस पर लगाए गए सारे आरोपों का उन्होंने तथ्यपूर्ण उत्तर दिया। 'सारिका' में प्रस्तुत 'मेरा पन्ना' में भी अपने वक्तव्यों द्वारा उस युगीन साहित्यिक-समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया।

फिल्म के लिए लिखी गई अनेक पटकथाएँ कमलेश्वर जी की प्रशस्ति का एक प्रमुख कारण है। उनकी पटकथाएँ भी आम जनता के दुःख-दर्द, तनाव, आर्थिक तंगी, पारिवारिक विघटन आदि को उजागर करने वाली हैं। उनकी ओजपूर्ण, प्रवाहमयी तथा आकर्षक भाषा भी अधिक प्रभावी है। उनकी भाषा की जादूगरी ने पाठक एवं दर्शक को विस्मित किया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर जी हिन्दी साहित्य-जगत के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार हैं।

Signature of Supervising Teacher:

Name & Designation of Supervising Teacher : Dr. V.V. GEORGEKUTTY
Asso. Professor
P.G. & Research Dept. of Hindi
St. Thomas College, Pala

Place: Pala
Date :